

Shri Shekhar Sen

Shri Shekhar Sen is a reputed singer, music composer, lyricist and actor whose well-researched mono-act musicals - Tulsi, Kabeer, Vivekanand, Saahab and Soordas written, directed, sung, composed and enacted by him, have received global acclaim for their amazing amalgam of skill, sensitivity and soul-power.

2. Shri Sen was born on Feb 16, 1961 in a Bengali family of Raipun Chhattisgarh to renowned classical singers and musicologists' the late Dr. Arun Kumar Sen, and the late Dr. Aneeta Sen. ln 1979, this genetic inheritance and personal creativity in the unique world of melody, emotion, rhythm and harmony brought him to Mumbai where he aspired to become a music composer. By 1984, he had begun singing while creating innovative musical programs based on Hindi Literature.

3. Shri Sen has to his credit more than 200 CDs and cassettes released since 1983 proclaiming his multiple skills as singer. Lyricist and composer He has also sung and composed music for many TV serials and films. He has performed at more than 1,200 singing concerts all over the world Since 1998 as playwright, actor, singer, director and composer, Shekhar`s musical-monoact plays "Tulsi", "Kabeer" Vivekananda","Saahab", "Soordas'" have been applauded worldwide in over 850 performances.

4. Shri Sen has been the recipient of abundant love from his audience, critical acclaim from the literati and innumerable awards and honours from prestigious organizations.



श्री शेखर सेन

श्री शेखर सेन, एक प्रतिष्ठित गायक, संगीतकार, गीतकार और अभिनेता हैं। आपके द्वारा अच्छी तरह खोज-परख कर लिखे गए, निर्देशित किए गए, गाए गए, रचे गए/संयोजित किए गए और अभिनीत किए गए एकल अंकीय संगीतात्मक नाटक - तुलसी, कबीर, विवेकानन्द, साहब और सूरदास को कौशल, संवेदना और आत्मिक शक्ति के विस्मयकारी समन्वय के फलस्वरूप, वैश्विक रूप से सराहना मिली।

2. आपका जन्म फरवरी 16, 1961 को रायपुर, छत्तीसगढ़ के एक बंगाली परिवार में विख्यात शास्त्रीय गायक और संगीत शास्त्री, स्वर्गीय डॉ0 अरुण कुमार सेन और स्वर्गीया डॉ0 अनीता सेन के यहां हुआ। स्वर-माधुर्य, भाव-प्रवणता, लय-ताल, स्वर-सामंजस्य के अनन्य संसार में आपकी आनुवांशिक विरासत और वैयक्तिक रचनात्मकता, आपको सन् 1979 में मुम्बई ले आई, जहां आपने एक संगीतकार के रूप में उभरने की अपनी आकांक्षा को पूरा करने का भरसक प्रयास किया। सन् 1984 तक आपने हिन्दी-साहित्य के बारे में नई खोज और नए प्रयोगों से युक्त अपने संगीतात्मक कार्यक्रमों की रचना करते हुए, गाना शुरू कर दिया था।

3. सन् 1983 से अब तक आपको अपनी 200 से ज़्यादा सीडीयों और कैसेटों के जारी हो जाने का श्रेय हासिल है, जिनसे गायक, गीतकार और रचनाकार के रूप में आपका बहुमुखी हुनर उजागर हुआ है। आपने कई टीवी धारावाहिकों और फिल्मों के लिए भी गाया है और संगीत-रचना की है। आपने विश्वभर में 1200 से ज़्यादा गायन-सम्मेलनों में अपनी प्रस्तुतियां की हैं। सन् 1998 से नाटककार, अभिनेता, निर्देशक और रचनाकार के रूप में एकल अंकीय संगीतात्मक नाटक -तुलसी, कबीर, विवेकानन्द, साहब, सूरदास की 850 से अधिक प्रस्तुतियों की विश्वभर में सराहना की गई है।

4. आपको अपने दर्शकों से असीम प्यार, विद्वन्मण्डली से समालोचनात्मक सराहना और प्रतिष्ठित संगठनों से अनेक पुरस्कार और सम्मान मिले हैं।